Nav Jyoti, Vol. 5, No. 10, January-June 2017 ISSN : 2249-7331

स्त्री चेतना और प्रेमचन्द

डॉ0 नरेन्द्र प्रकाश राय*

उन्नीसवीं शदी के अन्तिम 20–25 सालों में राष्ट्रीय चेतना नवजागरण की प्रबल लहर के रूप में हमारे देश में उठने लगी थी। इसमें समाज सुधार आन्दोलन भी थे, नवजागरण की भावना में भारतेन्दु और उनके समकालीन लेखकों की वाणी थी यह विरासत प्रेमचन्द को भी मिली थी।.... इस नवजागरण का एक पक्ष भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा की श्रेष्ठता पर बल देना था। यह एक तरह से राष्ट्रीय अस्मिता को स्थापित करना ही था और अपनी रचनाओं में प्रेमचन्द ने भारत की इस अस्मिता करना ही था और अपनी रचनाओं में प्रेमचन्द ने भारत की इस अस्मिता खूब उभारता है।[1] उनका उद्देश्य सामयिकता और देशक काल की सीमाओं से परे नहीं था। उनका साहित्य सामयिकता की सतह को छूने वाला साहित्य नहीं था, उसमें गइराई से डूबने वाला, देशकाल की सीमाओं के परस्पर सम्बन्ध को चित्रित करने वाला साहित्य था। इसलिए वह इतना सशक्त और प्रभावशाली है।[2] प्रेमचन्द ने अपने समय के ज्वलंत प्रश्नों और समस्याओं का बहुआयामी आंकलन करके लोक चेतना को जगाया। प्रेमचन्द ने उपन्यास को सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का वास्तविक कला का माध्यम बनाया और उसमें जीवन के विभिन्न भूमियों के चित्रण की अभूतपूर्व योग्यता उत्पन्न हुई। समाज के विभिन्न वर्ग उनकी मनःस्थिति, स्वार्थों के संघर्ष, सामाजिक रूढ़ियां एवं विषमताएँ, शासनतन्त्र की कठोरता, आर्थिक विषमता एवं जन्य असन्तोष, धार्मिक, नैतिक, वाह्याडम्बर आदि का विस्तार के साथ उपन्यास में अंकन हुआ है जबकि अंग्रेजी राज्य व्यवस्था के कारण मध्यकालीन सामन्तवाद का क्षय हो रहा था और आधुनिक पूँजीवाद का उदय हो रहा था।

स्वाभिमान

गोदान प्रेमचन्द का अन्तिम पूर्ण उपन्यास है। उनके अन्य उपन्यासों की अपेक्षा इसमें नारी चित्रण पर्याप्त विशदता और गहनता लिये हुए हैं। धनिया, झुनिया, सिलिया आदि ग्रामीण और मालती गोविन्दी आदि शहरी नारियाँ अपने माध्यम से स्त्री जीवन के अनेक बिन्दुओं को उभारा है। धनियां अपने परम्परागत परिवेश के कारण अक्कड़, झगड़ालू और कर्कशा होते हुये भी आदर्श पत्नी, आदर्श माँ और आदर्श सास सिद्ध होती है। इसके अतिरिक्त वह इतनी स्वाभिमानिनी, निडर, व्यवहार– कुशल महिला है कि सारे गाँव और आसपास के लोग उसे देवी मानने लगते हैं। कुछ दिन तक लोग उसके दर्शनों को आते रहे क्योंकि वह अद्भुत साहस दिखलाकर मर्दों के कान काटने में समर्थ है।[3]

वह नारी अधिकारों की प्रबल समर्थिका हैं– कि अपने पुत्र गोबर द्वारा बाल–विधवा झुनियां को अवैध रूप से घर आने पर भी उसे उन्मुक्त ह्रदय से स्वीकार करती है। ''उसकी दृष्टि में मेहरिया रख लेना पास नहीं है, रखकर छोड़ देना पाप है। गोबर जब लो लाजवश झुनिया को छोड़कर शहर भाग जाता है तो धनिया कहती है– ''कायर कहीं का जिसका बाँह पकड़ी उसका निर्वाह करना चाहिए कि मुँह में कालिख लगाकर भाग जाना चाहिए।[4]

वह अन्नपूर्णा देवी की भाँति सारे परिवार पर वरद छाया किये हुए हैं। उसका पति होरी जब दरोगा को रिश्वत रूप में घर उधार की सारी पूँजी देने लगता है, तो झपट कर कहती है– ''ये रूपये कहां ले जा रहा है?..... बता घर के परानी रात दिन मरे और दाने–दाने को तरसे, लता भी पहनने को मयस्सर न हो और अजुली भर रूपये लेकर चला है इज्जत बचाने।''[5]

* रीडर–हिन्दी विभाग, ला0ब0शा0पी0जी0 कॉलेज, मुगलसराय

गोदान की मालती उन सुशिसिता आधुनिकताओं की प्रतिनिधि हैं जो ज्ञान और विवेक, स्त्री अधिकारों तथा स्वाधीनता का सही उपयोग जानती है। मिस्टर खन्ना की पति पत्नी की अनुचिताचरण से व्यथित दाम्पत्य विषमता का शिकार बनी हुई एक विवश पत्नी होने पर भी मॉ रूप में बड़ा उदात्त व्यक्तित्व लिये हुये हैं। वह अपने पति के अत्याचारों से तंग आकर घर छोड़कर चली जाती है। किन्तु जब मिस्टर मेहता उसे मातृत्व के महान गौरव की याद दिलाते हुए कहते हैं– ''नारी केवल माता है, और उसके उपरान्त वह जो कुछ भी है वह मातृत्व का केवल उपक्रम मात्र हैं। मातृत्व संसार की सबसे बड़ी तपस्या हैं, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय हैं। एक शब्द में उस 'लय' कहूँगा जीवन का और नारी का भी।''[6]

रूढ़ियों की अस्वीकृति–

उन्नीसवीं शताब्दी की वैचारिक क्रान्ति, सुधारवाद तथा राष्ट्रवाद के नवजागरण में यह समझा जाने लगा कि जब तक सामाजिक कुरीतियों और जर्जर रूढ़ियों से मुक्ति नहीं मिलती, राष्ट्रोत्थान की कल्पना व्यर्थ है और इसके लिए आवश्यक है कि श्रद्धा नारी को समुचित शिक्षा अधिकार और सम्मान देना। उस समय सभी सुधारकों का ध्यान सबसे अधिक नारी जाति की स्थिति सुधारने की ओर गया। इस दिशा में राजाराम मोहन राय और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रशंसनीय प्रयत्न प्रेमचन्द से बहुत पहले हो चुके थे। प्रेमचन्द भी अपना दूसरा विवाह बाल–विधवा शिवरानी देवी से किया था। सन् 1919 में ऐनी बेसेन्ट ने भारतीय नारी समाज की स्थापना की। 1925 में पीनल कोड के द्वारा देवदासी प्रथा बन्द हुई। 1930 में शारदा एक्ट बना। 1926 में राष्ट्रीय नारी सभा तथा अखिल भारतीय नारी कांग्रेस का निर्माण हुआ। गाँधी जी उस समय सक्रिय राजनीति में आ चुके थे। वे नारी जाति के सबसे बड़े पोषक थे। वस्तुतः गाँधी जी की विचारधारा और प्रोत्साहन के कारण की भारतीय नारियाँ सविनय अवज्ञा आन्दोलन, जुलूस, पिकेटिंग आदि में भाग ले सकी और जेल भी गई। प्रेमचन्द की प्रेरणा से शिवरानी जी ने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में भाग लिया और जेल भी गई। इस प्रकार प्रेमचन्द ने जब लेखक आरम्भ किया, नारी को शिक्षित करने, समाज में स्वतंत्र रहने सामाजिक राजनैतिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। किन्तु इस नारी जाति की जागृति गति बहुत धीमी थी।[7]

प्रेमचन्द जो कुछ भी लिखते थे उसके पीछे उनका चिन्तन और निश्चित दृष्टिकोण होता था। प्रेमचन्द से पहले के कथाकारों दृष्टिकोण होता था। प्रेमचन्द से पहले के कथाकारों का दृष्टिकोण रूढ़ियों से जकड़ा, अन्धविश्वास और परम्पराओं के बन्धनों से बधां, प्रगतिशील का विरोध नारी को तो कुलता या देवी, प्रतिमा, जड़ समझते थे। प्रेमचन्द पहलीबार नारी को भी मनुष्य समझा और समाज, परिवार के हेतु उसके अस्तित्व को महत्व प्रदान किया। प्रेमचन्द नारी को उच्च शिक्षा, आर्थिक स्वावलम्बन और सभ्यता में अगाध आस्था रखते थे। उनका नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण गोदान में मेहता के विचारों से व्यक्त हुआ है– ''वे एक ही स्थान पर त्याग, सेवा और पवित्रता का केन्द्रित होना, त्याग, बिना फल की आशा के ही, सेवा बिना असन्तोष प्रकट किये हो और पवित्रता सीजर की पत्नी जैसा हो।'' मेहता के शब्दों में प्रेमचन्द यहाँ तक कहते हैं– ''मैं प्राणियों के विकास में स्त्री पद को पुरूषों के पद से श्रेष्ठ समझता हूँ।''[8]

सेवा, संयम और समर्पण–

संसार में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं और वे नारी के त्याग और सेवा भाव को अत्यन्त पावन मानते थे। प्रेमचन्द ने विवाह पूर्व प्रेम की स्वाभाविकता को समझा और दर्शाया भी है, किन्तु अन्ततः उसकी पावनता को त्याग से आवृत कर दिया। प्रेमचन्द युग में विवाह पूर्व प्रेम स्वार्थी और असामाजिक समझा जाता था। इसी कारण मनोरमा, प्रेमा और नैना की प्रेम भावना लोक सेवा की उदात्त की ओर उन्मुख हो जाती है। लूट जाने पर नारी अपनी ही दृष्टि में पतित हो जाती है। मुन्नी अपना सतीत्व लूट जाने पर अपने आपको मरा हुआ समझती है। गोविन्दी, वागीश्वरी, मनोरमा और सिलियां के चेहरों पर सतीत्व का तेज देखते ही बनता है। वेश्यावृत्ति प्रेमचन्द युग में सातान्य बात थीं प्रेमचन्द उन

नारीयों को भी जो झरोखों में बैठी हैं, जिन्होंने अपनी लज्जा और सतीत्व भ्रष्ट कर दिया हैं, घृणा की दृष्टि से नहीं देखतें। वे इस वृत्ति के लिए समाज को ही दोषी ठहराते हैं। और सद्भावना से उनके संस्कारों में परिवर्तन रखते थे। सेवा सदनों के माध्यम से उन्हें चतुर गृहणियाँ बनाने चाहते थे। सुमन और जोहर का भी ह्रदय परिवव्रन किया किन्तु समाज का हल कुछ नहीं हो सका। जिस आशावादिता और ह्रदय से प्रेमचन्द ने सुमन और जौहर को देखा उसी दृष्टि से विधवा, सिलिया, सुभागी, कल्याणी को भी देखा है। प्रेमचन्द ने विधवाओं को पुर्नविवाह की अपेक्षा तय, संयम और आध्यात्म का संदेश देते हैं। उस युग के समाज की सही मांग थी। प्रेमचन्द को जो परम्परा मिली थी उसमें तो नारी सौन्दर्य की गुड़िया और विलास की प्रतिमा मात्र थी इस जड़ता को तोड़कर प्रेमचन्द ने एक युगान्तर स्थापित किया और सदियों से उपेक्षित नारी को समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की और आग आने वाले कथाकारों के लिए यह मार्ग प्रशस्त किया कि नारी श्रद्धा बन गयी सच तो यह है कि समाज और राष्ट्र की विडम्बनाओं का अनुभव प्रेमचन्द की आत्मा जिस वांछित प्राप्तय के लिए छटपटाती थी वह उन्होंने अपने नारी पात्रों के माध्यम से ही व्यक्त किया है। इसी कारण उनके नारी पात्र अधिक सशक्त भी है।

पारिवारिक और सामाजिक दायित्व

मानव सभ्यता और संस्कृति का इतिहास नारी के विभिन्न पहलुओं, रूपों का विश्व–कोष, माना जा सकता है। विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम् रचनाओं का उद्देश्य किसी न किसी नारी पात्र की प्रस्तुति रहा है। कारण की जीवन के उतार–चढ़ाव में जिस धैर्य और सहनशीलता उदारता और क्षमा का परिचय नारी देती हे, पुरूष नहीं। प्रेमचन्द गोदान में यह बात मेहता द्वारा कहते हैं– ''मैं प्राणियों के विकास के पद को पुरूष से श्रेष्ठ समझता हूँ।[9] मृत्यु के जीवन का सत्यामान निष्क्रिय होने वाले मनु को श्रद्धा ही पुनः कर्मोन्मुख बनाती है। प्रेमचन्द के अपने युग और यगु के माँग को बड़ी गहराई से समझा और अनुभव किया था। इसी कारण साहित्य के प्रति उन्होंने अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए उस साहित्य को ठोस माना है। जिसमें उच्च चिन्तन स्वाभिमान सृजनशक्ति, सौन्दर्य, प्रेरणा, गीत एवं संघर्ष के भाव हो।

प्रेमचन्द युग में भारतीय नारी में राजनीतिक चेतना एवं राष्ट्रीय जागृति का संचार हुआ। गाँधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में राष्ट्र के सभी वर्गों का सहयोग और सहानुभूति प्राप्त करने की चेष्टा की थी। वहिष्कार आन्दोलन, राष्ट्रीयता आन्दोलन का प्रमुख अंग था। जिसके संचालन के लिए गांधी जी ने नारी का विशेष रूप से आह्वान किया। फलस्वरूप हजारों की संख्या में स्त्रियाँ घरों से बाहर निकल आयी। त्याग, तपस्या और वीरता भारतीय नारी की चारित्रिक विशेषताएँ हैं। अतः राष्ट्र की मुक्ति के संग्राम में स्त्रियों को आशातीत सफलता मिली और कहीं–कहीं तो पुरूषों से भी आगे निकल गयी। भारतीय नारी के इस जागरण का अवलोकन प्रेमचन्द ने अत्यन्त निकट से किया था। वे साहित्य के द्वारा जीवन सत्य की पहचान और समता देने में विश्वास करते थे। नारी पात्रों के चित्रण में प्रेमचन्द की दृष्टि इन्हीं दो बिन्दुओं पर टिकी है। निर्मला, सुमन, जोहरा, मालती और धनिया आदि के चित्रण द्वारा उन्हेांने उस सम की वास्तविक स्थिति सदियों पुरानी अपनी दासता की दास्तान कहते हुए भावी जीवन की प्रगति के लिए संघर्षरत होकर भारतीय नारी का जीवन्त इतिहास ही लिख गई। इन नारी पात्रों का चित्रण प्रेमचन्द ने करूणा, विगलित होकर सहानुभूति वश नहीं किया। उनके समस्याओं और अभावों को उन्होंने समझा और उसके कारण भी समझायें।

जीवन के नवोन्मुष की ओर में प्रेमचन्द का कोरा आदर्शवादी दृष्टिकोण नहीं था। इसका मुख्य उद्देश्य पहले लेखक थे जिन्होंने अपने नारी पात्रों को सहज मानवीय रूपों में चित्रित किया अन्यथा सदियों से भारतीय नारी को मनुष्य नहीं समझा गया। चारण काल में उसे विजय की वस्तु बनाया गया तो मध्यकाल में वैराग्यजनित भावना का साधन। रीतिकाल में कामिनी और विलासिनी के रूप में,

आधुनिक काल में उसे अपनी जीवन में कभी विधवा और कभी सती प्रथा की बलि वेदी पर चुपचाप प्राणों की आहुति देती।

राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी के सक्रिय सहयोग की यथार्थ चित्र तो प्रेमचन्द की कुछ राजनीतिक उपन्यासों में विशेष रूप से उभरा है। बदली हुई परिस्थितियों एवं शिक्षा के प्रसार के प्रसार के कारण नारी में राजनीतिक चेतना का उदय हुआ। शिक्षित नारी अपने आसपास के वातावरण एवं राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति सचेत हैं। प्रेमचन्द रंगभूमि उपन्यास की इन्दु ऐसी ही राजनीतिक चेतना सम्पन्न नारी है। उपन्यास के अन्तति मिस्टर क्लार्क के प्रभाव में आकर इन्दु के पति महेन्द्र कुमार सूरदास की भूमि जनसेवक को दिलवाने की निश्चय कर लेता हे। इन्दु उसके निश्चय का विरोध करते हुए कहती हैं– ''केवल अधिकारियों के भय से या बदनामी से बचने के लिए न्याय पथ से मुँह फेरना अत्य त अपमानजनक है। आपको नगरवासियों और विशेषतः दीन जनों के स्वत्व की रक्षा करनी चाहिए। अगर हुक्काम किसी पर अत्याचार करे तो आपको उचित है दुखियों की हिमायत करें। निजी हानि लाभ की चिन्ता न करके हुक्काम का विरोध करें..... चाहे इसके लिए पद त्याग ही नहीं, किसी बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़े।[10]

प्रेमचन्द का कर्मभूमि उपन्यास भारतीय नारी की राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक जागृति का सजीव चित्रण है। इस उपन्यास की नारियाँ प्रत्येक आन्देालन में पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लेती हैं और सफल भी होती हैं। दरिद्र, अछूतों पर अत्यचार होते देखकर सुखदा उनका पक्ष लेती है। उसके बाद वह नगर के सभी आन्दोलनों का नेतृत्व करती है। निम्न वर्ग के लिये मकान बनवाने के उद्देश्य से सुखदा जिस आन्दोलन का सूत्रपात करती है, उसके गिरफ्तार के बाद वृद्धा, पठाकिन तथा सुखदा की माँ रेणुका उसे बल पहुँचाती है। और नैना के बलिदान से यह आन्दोलन से यह आन्दोलन सफल होता है। चमारों की बस्ती में किसानों के कष्टों से द्रवीभूत होकर अमर लगानबन्दी आन्दोलन को आरम्भ करता है। उसके बन्दी हो जाने पर मुननी इस आन्दोलन का नेतृत्व करती है।

प्रेमचन्द के सती पात्र की एक अन्य विशिष्टता है वह है, देशभक्ति उनका समस्त साहित्य राष्ट्रीय संघर्ष के समय लिखा गया था। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये भारत की महिलाओं ने भी आगे बढ़कर भाग लिया है। सभी स्तरों की स्त्रियों ने अपने–अपने को देश–प्रेम पर बलिदान किया था। प्रेमचन्द की नोहरी, मुन्नी, सुखदा, सलोनी आदि इसके उदाहरण हैं। ये पात्र प्रेमचन्द में 'देशभक्ति' प्रतीक है तथा स्त्रियों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण के आदर्श रूप।

प्रेमचन्द को अपने किसान स्त्री पात्रों में सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई है। यह भी कोई आकस्मिक बात नहीं है, इसका स्पष्ट कारण हैं कि कवि मध्यम वर्गीय होते हुए भी किसानों के अधिक नजदीक थे। इन पात्रों पर यदि उन्होंने अपने दार्शनिक विचारों को थोपने का प्रयत्न भी किया है। पर इनके यहाँ इसकी कोई गुंजाइश कोई गुंजाइश नहीं थी। ये पात्र अपनी प्रकृति स्वभाव व जीवन के अनुभवों को लेकर अपने चरित्रों का स्वाभाविक विकास कर पाते हैं। स्त्री पात्रों के चरित्रों का जो क्रम ब्रजरानी था सुमित्रा से शुद्ध हुआ वह नोहरी, सलोनी व धनिया में अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। इन पात्रों में प्रेमचन्द की दृष्टि का भी विकास हुआ। राष्ट्र की गरीबी में उनके स्त्री पात्रों में प्रेमचन्द की दृष्टि का भी विकास हुआ राष्ट्र की गरीबी में उनके स्त्री पात्रों को संघर्ष दिया। देश की सांस्कृतिक, दार्शनिक परम्पराओं ने उनको सरसता और सहृदयता प्रदान कि जैसे उनके ये पात्र इस अनुभूति के स्तर पर ही रहे आगे बढ़कर ठोस वैज्ञानिक, दार्शनिक स्तर तक नहीं पहुँच पाये।[11]

क्रान्ति की नयी चेतना–

प्रेमचन्द के लगभग सभी उपन्यासों में क्रान्तिकारी स्त्रियों का भी वर्णन हुआ है। किसान स्त्री पात्र ठोस क्रान्तिकारी स्तर तक अवश्य पहुँचे हैं जैसे– धनिया, सलोनी, नोहरी आदि। इन पात्रों के चरित्रों का विकास प्रेमचन्द की देशभक्ति, किसान प्रेम व स्वयं इन पात्रों के सामाजिक मनोविज्ञान के

कारण संभव हुआ। फिर भी स्वयं प्रेमचन्द स्त्री को हमेशा परिवार की लक्ष्मी ही समझते रहे। गोदान में मेहता के द्वारा ये कहलावकर उनका यह दृष्टिकोण उनका यह दृष्टिकोण मुखरित हुआ है– मेहता कहता है ''मुझे खेद है कि महारी बहने पश्चिम का आदर्श ले रही हैं। जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिर कर विलास की वस्तु बन गयी है।[12]

प्रेमचन्द के स्त्री पात्रों की सबसे बड़ी महानता यह है कि वे यथार्थ में भारतीय हैं। अपने जीवन को अधिक सुखी, स्वतंत्र व सम्पन्न बनाने के लिए संघर्ष में प्रयत्नशील हैं। संघर्ष और मेहनत करती हुयी भारतीय स्त्रियाँ उनके साहित्य में मुखरित हो सकी हे। निःसंदेह प्रेमचन्द नारी के इसी रूप के उपासक थे। प्रेमचन्द के उपन्यासों के समीक्षकों ने गोदान में एक प्रमुख पात्र मेहता को प्रेमचन्द की नारी विषयक विचारों का प्रवक्ता स्वीकार किया है। मेहता का कथन स्वयं इसका प्रमाण माना जा सकता है– ''देवियों के उन रूप लोगों में नहीं है जो कहते हैं स्त्री और पुरूष में समान शक्तियाँ हैं, समान प्रवृत्तियाँ हैं और उसमें कोई भिन्नता नहीं है। इससे भयंकर असत्य की मैं कल्पना नहीं कर सकता .....आपकी विद्या और आपका अधिकार किसी ध्वंस में नहीं है। इस नकली अप्राकृतिक विनाशकारी अधिकारों के लिए आप वे अधिकार छोड़ देना चाहती हैं जो आपको प्रकृति ने दिये हैं।[13]

स्पष्ट है कि प्रेमचन्द के लिए प्रगतिशीलता के सभी लक्षणों की यथा समय और यथावसर आवश्यकता स्वीकार करते हुए भी उसके भारतीय मर्यादावादी आदर्शों से सर्वथा विछिन्न हो जाने के पक्ष में नहीं है। प्रेमचन्द के स्त्री पात्रों के चरित्रों का अध्ययन करते हुए स्वयं प्रेमचन्द का मनोविज्ञान हमारे सामने आता है। उनको सामाजिक यथार्थ की आत्मानुभूति थी। इसी के फलस्वरूप इन पात्रों के चरित्र इतने सही रूप में सामने आ आये, किन्तु अनुभूति के अलावा इसके कुछ परम्परागत दार्शनिक, धार्मिक संस्कार थे। अनुभूति और संस्कारों में द्वन्द्व उनके साहित्य में सर्वत्र दिखलाई पड़ता है। यही द्वन्द्व स्त्री पात्रों के वैयक्तिक चरित्रों पर हावी भी हो जाता है वे सामाजिक कुरीतियों व शोषण के खिलाफ संघर्ष भी करती हैं। किन्तु यह संघर्ष अपने तर्क संगत स्तर पर नहीं पहुँच पाता। सुमन विद्रोह करती हैं किन्तु दार्शनिक धार्मिक दलदल में फॅस जाती है इतना अवश्य है कि लेखक सामाजिक सीमाओं में बद्ध रहता है। प्रेमचन्द की तत्कालीन सीमाओं थी। इसी कारण उनको स्थान–स्थान पर अपने स्त्री पात्रों के चरित्रों पर ब्रेक सा लगाना पड़ा था। इसी कारण उनको वनिता आश्रम ओर सेवासदन आदि का निर्माण भी करना पड़ा है।[14]

प्रेमचन्द के स्त्री पात्र कोरी कल्पना की उपज मात्र नहीं है, वे तो सामाजिक यथार्थ हैं। उनके सभी पात्रों की जितनी स्वस्थ भावना है, उतनी भारत के किसी भी उपन्यासकार में नहीं मिलती। यह संघर्ष की भावना भी राष्ट्रीय सामाजिक धरातल पर ही उभरती है। जीवन के कड़े अनुभव प्रेमचन्द के स्त्री पात्रों को संघर्ष के पथ पर ढकेलते हैं। सुमन और सुधा आदि भी सामाजिक शोषण से टकराती हैं और विलासी, धनिया भी। यह संघर्ष भी इन पात्रों के सामाजिक स्तर के अनुरूप हैं। जीवन स्थितियाँ सुमन की धनियाँ का चरित्र नहीं दे सकती। दोनों के जीवन भिन्न हैं। इसलिए संघर्ष के दोनों मार्ग भिन्न हैं। किन्तु सामाजिक वातावरण सब कुछ नहीं हैं। स्वयं व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक भी उनके चरित्रों को निर्धारित करता हैं निर्मला इसका सुन्दर प्रमाण हैं।

सुमन अपने पति से झगड़कर घर से निकल पड़ती है। सुधा अपने लम्पट पति से वैधव्य को ठीक समझती है किन्तु निर्मला के चरित्र में इतना बल नहीं है किन्तु सामाजिक वातावरण एक ही हें। बल्कि निर्मला के मामले में अधिक उग्र और खराब है किन्तु सब तरफ से असन्तोष होने के बावजूद भी वह विद्रोह नहीं कर पाती, चरित्र चित्रण की दृष्टि से प्रेमचन्द की यह सफलता कहीं–कहीं पर हावी हो गये हैं, किन्तु कहीं–कहीं पर उनके पात्र जैसे– निर्मला, सुधा, झुनिया आदि अपने मनोविज्ञान के अनुरूप चारित्रिक विकास पाते हैं। इस दृष्टि से प्रेमचन्द को कुछ पात्रों में सफलता मिली है तो कहीं असफलता

भी। जहाँ पर लेखक ने अपने दार्शनिक विचारों को पात्रों पर आरोपित करने का प्रयत्न किया है वहाँ पर असफलता ही मिली हैं जैसे– गायत्री के चरित्र में।[15]

संदर्भ :

[1] प्रेमचन्द का कथा संसार, डॉ0 नरेन्द्र मोहन, पृ0 31–32
[2] हिन्दी साहित्य, डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 436
[3] गोदान, प्रेमचन्द, पृ0 163
[4] वही, पृ0 122–23
[5] वही, पृ0 142
[6] वही, पृ0 251
[7] प्रेमचन्द साहित्य में व्यक्ति और समाज, डॉ0 रक्षापुरी, पृ0 161
[8] प्रेमचन्द नारी की सम्पत्ति उसका सतीत्व मानते थे, आत्मसम्मान
[9] गोदान, प्रेमचन्द, पृ0 242
[10] रंगभूमि, प्रेमचन्द, पृ0 174
[11] प्रेमचन्द के स्त्री पात्र, सम्पादक : कोमद कोठरी एवं विजयदान देय, पृ0 46
[12] गोदान, प्रेमचन्द, पृ0 236
[13] वही, पृ0 202–203
[14] प्रेमचन्द के स्त्री पात्र, सम्पादक : कोमल कोठारी एवं विजयदान देय, पृ0 37–38
[15] वही, पृ0 39–40